8

दाऊद की संतान/अब्राहम की संतान

(मत्ती 1)

यदि परमेश्वर यीशु की कहानी बताने के लिए आपको नया नियम लिखने का काम सौंपता तो आप इसका आरम्भ कैसे करते? सम्भवतया आप वैसे आरम्भ *नहीं* करते जैसे मत्ती ने किया, सत्रह आयतों वाली वंशावली के साथ जिसमें ब्यालीस पीढ़ियों का वर्णन है। मत्ती 1:1-17 पूरी बाइबल के सबसे कम पढ़े जाने वाले वचनों में से एक है। अधिकतर लोग इतने भाग को छोड़कर आयत 18 से आरम्भ करते हैं और इस प्रकार करते हैं जैसे पहली सत्तरह आयतें हों ही न।

सम्पूर्ण बाइबली प्रकाशन के संदर्भ में देखने पर नया नियम आरम्भ करने का *सिद्ध* ढंग मत्ती 1 है। मत्ती की पुस्तक नये नियम में पहले इसलिए नहीं आती कि यह सबसे पहले लिखी गई पुस्तक है। पौलुस के सभी पत्र सम्भवतया मत्ती से पहले लिखे गए थे। हमारा नया नियम *कालक्रमिक* प्रबन्ध में नहीं बनाया गया, बल्कि यह *तार्किक* प्रबन्ध में बनाया गया है। यीशु की कहानी बताने के लिए पहले सुसमाचार की चार पुस्तकें हैं। फिर यीशु द्वारा आरम्भ की गई लहर की कहानी, प्रेरितों के काम आता है, उसके बाद हमें एक झलक देने के लिए कि कलीसिया होने का क्या अर्थ है कलीसियाओं तथा निजी लोगों के नाम विभिन्न पत्र हैं। अन्त में यीशु को परमेश्वर की महिमा प्राप्त और विजयी मेमने के रूप में प्रस्तुत करते हुए जो फिर आकर अपने लोगों को स्वर्ग में ले जाएगा, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हर बात को बड़े चरम तक लाती है।

नया नियम वंशावली की बात से क्यों आरम्भ होता है? क्योंकि यह पुराने और नये नियमों के बीच सम्पूर्ण पुल बनाता है। मत्ती के पाठकों को (जो निःसंदेह अधिकतर यहूदी थे) पहले यह वंशावली केवल नामों की सूची नहीं थी। बल्कि, जैसा थॉमस जी. लौंग ने ध्यान दिलाया है कि यह ''कहानियों का साहित्य संग्रह, जिसमें प्रत्येक नाम में से यादें बहती हैं।''[1] इब्रानी धर्मशास्त्र सीखते बड़े होने वाले पाठकों के लिए ''अब्राहम,'' ''बोअज,'' ''उजिय्याह,'' ''ज़रूबाबिल'' और शेष का नाम ही उन से जुड़ी पुराने नियम की कहानियों को याद दिलाने के लिए काफ़ी था। यह ''परिवार वृक्ष'' कुछ-कुछ संक्षिप्त रूप में परिवार की कहानियों की एलबम की तरह है और यीशु तक ले जाने के लिए जो इस सब का चरम और भरपूरी है, पूरे परिवार का इतिहास दिखाया गया है।

परन्तु मत्ती 1 में केवल वंशावली से कहीं अधिक दिया गया है। वंशावली के बाद, आयतें 18 से 25 यीशु के जन्म की कहानी बताती हैं (नये नियम में इस अद्‌भुत घटना के केवल दो वृत्तांतों में से एक, जिनमें दूसरा लूका 2 में है)। वंशावली और जन्म की कहानी उस सब का सार बताने के लिए जो मत्ती और नये नियम के शेष लेखकों ने हमें बताना था साथ-साथ चलते हैं।

विशेष रूप से मत्ती 1 हमें यीशु की और यह कि वह कौन है महत्वपूर्ण सच्चाइयां बताता है।

यीशु, इस्राएल का मसीहा

मत्ती 1:1 आरम्भ होता है, ''अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली।'' ''यीशु मसीह'' से इतना परिचित है कि हमें लगता है कि ''मसीह'' यीशु का गोत्र नाम है। बेशक इसका इस्तेमाल कुछ इसी ढंग से होने लगा है, पर इसकी मूल मंशा इसके बिल्कुल उलट थी।

नाम ''मसीह'' यूनानी भाषा के शब्द ''ख्रिस्टोस'' से लिया गया है जो इब्रानी भाषा ''मसायाह'' का समानांतर है। इस कारण ''यीशु मसीह'' नाम से कहीं बढ़कर विश्वास का कार्य है। नये नियम के कुछ अनुवादों (KJV; ASV; NIV; ESV) में मत्ती 1:1 में केवल ''यीशु मसीह है''; पर अन्य (NASB; NRSV; NLT) में हमें याद दिलाने के लिए कि यीशु ख्रिस्ट कहना वैसा ही है, जैसा ''यीशु ही मसीहा है'' ख्रिस्टोस का अनुवाद मसायाह या मसीह किया गया है। (यह देखने के लिए कि कितना फर्क लगता है, पहले ''मसीहा'' और फिर ''ख्रिस्तुस'' का इस्तेमाल करते हुए 16 से 18 आयतों को पढ़ने की कोशिश करें।)

''मसीहा'' का क्या अर्थ है ? मूल में इसका अर्थ ''अभिषिक्त'' है। पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा राज्यों और भविष्यवक्ताओं का अभिषेक अपने आधिकारिक प्रतिनिधि होने के लिए किया जाता था, जो उसके नाम से बात करें। फिर चिर-प्रतीक्षित आदर्श राजा होने के लिए ''मसीहा'' शब्द प्रचलन में आया जो 2 शमूएल 7 में दाऊद से की गई प्रतिज्ञा वाला उसकी गद्दी पर बैठकर इस्राएल का सदा के लिए शासन करने वाला था। छुटकारा दिलाने वाले के आने की यह आशा जैसे नबियों के द्वारा इस्राएल के लिए बार-बार इस प्रतिज्ञा के रूप में आती थी कि परमेश्वर एक दिन उन्हें ''राज्य फेर देगा'' जिसका अर्थ वे उसके दमनकारी शत्रुओं को पराजित करने की प्रतिज्ञा के रूप में लेते थे।

मत्ती वाली वंशावली का उद्देश्य यीशु को प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा के रूप में उसका परिचय समझाने के लिए अब्राहम और दाऊद दोनों के वंश में से होने के रूप में दिखाना था। 1:1 में दाऊद अब्राहम से पहले आता है, चाहे कालक्रम के अनुसार अब्राहम दाऊद का पूर्वज था। बात साफ है कि यीशु ही दाऊदी मसीहा, यानी वह वंश है, जिसके लिए परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह सदा के लिए राज करेगा।

मत्ती का संदेश यह है कि दाऊद और सारे इस्राएल के साथ की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा यीशु में पूरी हो गई है। इसलिए मत्ती, मरकुस और लूका (सुसमाचार के ''समानांतर'' वृत्तांत) यीशु की परमेश्वर के राज्य की शिक्षाओं पर ज़ोर देते हैं (मत्ती में आम तौर पर ''स्वर्ग का राज्य'') जिसमें यीशु आदर्श राजा है और उसके आने के साथ पृथ्वी पर परमेश्वर का शासन आरम्भ हो जाएगा। ''उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 4:17)। इन्तज़ार की घड़ियां खत्म। राजा आ चुका है! इसीलिए उसके आने की कहानी को ''सुसमाचार'' कहा जाता है-यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पूरा होने के समय का शुभ समाचार है।

यीशु, संसार का उद्धारकर्त्ता

यीशु मसीह केवल इस्राएल का ही मसीहा होता, तो यह उनके लिए जो यहूदी नहीं हैं,

का शुभ समाचार न होता। परन्तु मत्ती हमें बताता है कि वह लोगों के एक ही समूह के लिए न होकर, उससे कहीं, कहीं अधिक है। वह संसार का ''उद्धारकर्त्ता'' भी है।

1:21 में स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया कि वह मरियम के बच्चे का नाम ''यीशु'' रखे, क्योंकि वह ''अपने लोगों को *उनके पापों से* बचाएगा।'' ''यीशु'' इब्रानी भाषा के शब्द ''यहोशु'' (या यहोशुआ) से लिया गया यूनानी रूप है, जिसका अर्थ है ''प्रभु बचाता है'' या ''प्रभु उद्धार है।'' मसीहा के लिए यह नाम क्यों चुना गया? क्योंकि उसने ''अपने लोगों को उनके पापों से बचाना'' था। यीशु ने केवल रोमी दमन से राष्ट्रीय छुड़ाने वाला ही नहीं होना था, उसने तो रोम से भी घातक शत्रु से सब लोगों का उद्धार करने वाला बनना था।

वंशावली अपने आप में सब के उद्धार की बात करती है (यानी यह केवल यहूदियों के लिए ही नहीं, बल्कि सब पापियों के लिए था)। उन ब्यालीस पीढ़ियों की सूची को देखने पर पाप की कुछ चौंकाने वाली कहानियों का स्मरण आता है। दाऊद स्वयं व्यभिचार, हत्या और झूठ बोलने के पाप में घिरा था (2 शमूएल 11; 12)। इस्राएल के बारह गोत्रों का पुरखा याकूब, धोखेबाज़ था, यानी ऐसा व्यक्ति था जिससे हम कभी वास्ता नहीं रखना चाहेंगे (उत्पत्ति 27-31)। आज तक के संसार का सब से बुद्धिमान व्यक्ति सुलैमान विदेशी स्त्रियों से विवाह करके और इस्राएल में मूर्तिपूजा आरम्भ करने की अनुमति देकर, बुढ़ापे में महामूर्ख बन गया (1 राजाओं 11:1-8) इस्राएल के एक दुष्टतम राजा मनश्शे ने वास्तव में मन्दिर के भीतर ही मूर्तियों की वेदी बनवा दी थी (2 राजाओं 21:1, 4-6)। तौभी वे सभी यीशु के परिवार-वृक्ष में हैं, जो इस बात का संकेत है कि वह ''सचमुच के पापियों'' को उनके पापों से बचाने के लिए आया। (यह इस बात का भी संकेत है कि मत्ती यह वंशावली अपने हिसाब से नहीं ''बना रहा'' था, क्योंकि उसने यीशु के बनावटी ''शुद्ध'' वंशावली देने के लिए कोई ''साफ़ सफ़ाई'' नहीं की।)

वंशावली की सूची में स्त्रियां भी शामिल हैं। सूची में पांच स्त्रियों का नाम दिया गया है: तामार, रहाब, रूत, बतशेबा और मरियम। यहूदी वंशावली में स्त्रियों का नाम जोड़ना नई बात नहीं थी पर यह आम नहीं था (उदाहरण के लिए तुलना करें, उत्पत्ति 4:17-22 से उत्पत्ति 10:1-20)। पांच स्त्रियों का नाम जोड़कर मत्ती स्पष्ट रूप से एक बात कहना चाहता था कि यीशु पुरुषों और स्त्रियों दोनों का उद्धारकर्त्ता बनने के लिए आया। उसने परमेश्वर की योजना को लागू करने में स्त्रियों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को भी स्वीकार किया।

इसके अलावा वंशावली का बहुराष्ट्रीय स्कोप था, क्योंकि यहां वर्णित पांच में से चार स्त्रियां स्पष्ट रूप से गैर इस्राएली थीं। तामार यहूदा द्वारा अपने बेटे से विवाह के लिए चुनी गई कनानी स्त्री थी। रहाब एक कनानी वेश्या थी। रूत एक मुआबिन थी जिसने एक इस्राएली परिवार में विवाह किया था। बतशेबा, जिसके साथ राजा दाऊद ने व्यभिचार किया था, हित्ती उरिय्याह की पत्नी थी और माना जाता है कि वह स्वयं भी हित्ती थी। वंशावली में हमें ''ग्रेट कमीशन'' का पूर्वस्वाद भी मिलता है जिसके साथ मत्ती रचित सुसमाचार का समापन होता है: ''इसलिए तुम जाकर *सब जातियों* के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और वे सब बातें मानना सिखओ जिनकी मैनें तुम्हें आज्ञा दी है'' (28:19, 20क)।

फिर से मत्ती की बात साफ़ है कि नर हों या नारी, यहूदी हों या अन्यजाति, यीशु सब का

उद्धारकर्त्ता है क्योंकि हम सब *पापी* हैं।

यीशु, परमेश्वर और मनुष्य

यीशु के गर्भ में और जन्म की कहानी की बात करते हुए मत्ती ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वह यूसुफ का जैविक पुत्र नहीं था। बेशक मरियम और यूसुफ़ की ''सगाई'' (विवाह ठहराया गया) हो चुकी थी पर ''उनके इकट्ठा होने से पहले'' यानी उनके किसी भी प्रकार के शारीरिक मिलन से पहले मरियम गर्भवती हो गई (1:18)। आयत 25 ज़ोर देती है कि उसने ''उसे तब तक नहीं जाना, जब तक वह पुत्र नहीं जनी'' (ESV)। इसके अलावा मत्ती दो बार कहता है कि मरियम पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा गर्भवती हुई (आयतें 18, 20) और आयत 23 विशेष रूप से कहती है कि वह कुंवारी थी। (यह तथ्य कि यीशु यूसुफ़ का जैविक पुत्र नहीं था वंशावली की वैधता को प्रभावित नहीं करता। गोद लिया हुआ पुत्र कानूनी तौर पर गोद लेने वाले अपने पिता का वंश होता था।) मत्ती के अनुसार यीशु का गर्भ में आना और जन्म, यशायाह नबी के द्वारा कही गई प्रभु की बात को ''पूरा'' करने के लिए इस निराले ढंग से हुआ: ''एक कुंआरी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी [जिसका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे संग']'' (यशायाह 7:14)। अन्य शब्दों में परमेश्वर ने अपने पुत्र को ईश्वरीय और मानवीय दोनों कारणों से इस संसार में लाने के लिए यह माध्यम चुना। नया नियम बार-बार घोषणा करता है कि यीशु 100 प्रतिशत मनुष्य और 100 प्रतिशत परमेश्वर है यानी वह ''आधा-आधा'' नहीं है या ऐसा नहीं है कि वह कुछ ईश्वरीय गुणों वाला मनुष्य है। हमारी सीमित सोच के लिए इसे समझना असम्भव है, पर यह परमेश्वर के स्वभाव के रहस्य का भाग है।

वंशावली का एक असर इस बात पर ज़ोर देना है कि यीशु सचमुच का एक मनुष्य था जो इतिहास में एक विशेष समय में रहा। और जिसके विशेष मानवीय पूर्वज थे। (अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में यीशु को रखने पर लूका के ज़ोर के लिए देखें लूका 3:1, 2.) यह आसान सा तथ्य कई लोगों को बचा लेता है, जो यीशु में वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति के बजाय एक विचार या भावना से अधिक विश्वास करते हैं। नया नियम इस प्रकार के शब्दों से आरम्भ नहीं होता, ''एक बार की बात है कि यीशु नाम का एक आदमी था।'' हम मिथ्यहास या परी कथाओं की बात नहीं कर रहे; हम परमेश्वर के सम्पूर्ण मानवीय पुत्र की बात कर रहे हैं।

साथ ही यीशु पूरी तरह से परमेश्वर है। उसके तीन चेलों को रूपान्तर के समय इस तथ्य के गवाह बनने का सौभाग्य मिला था (मत्ती 17:1-8)। पतरस, याकूब और यूहन्ना पहाड़ पर यीशु के साथ गए थे, और उनकी आंखों के सामने वह बदल गया (''रूप बदल गया'') ताकि वे उसे अपनी ईश्वरीय महिमा में देख सकें। मूसा और एलिय्याह उसके साथ प्रगट हुए, और जब पतरस ने उनमें से प्रत्येक के लिए जगह बनानी चाही, तो एक बादल उस दृश्य पर छा गया। एक आवाज़ (स्पष्टतया परमेश्वर की) ने बोलकर कहा, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं; इसकी सुनो!'' तब तक वे यीशु को केवल मनुष्य के रूप में देखते थे, चाहे बेशक एक बहुत ही विशेष मनुष्य को। इस अवसर पर उन्होंने इसे मनुष्य से कहीं बढ़कर देखा; वह शरीर में परमेश्वर का पुत्र था, जो पूर्णतया ईश्वरीय स्वभाव में साझी था, जैसा कि पौलुस ने बाद में कहा (कुलुस्सियों 1:19; 2:9)।

परमेश्वर के विल्क्षण पुत्र के रूप में, यीशु बहुत ही सोची समझी योजना और तैयारी के परिणाम स्वरूप संसार में आया, जिस पर मत्ती 1 और 2 में ज़ोर दिया गया है। उसके आने की पूर्वसूचना यशायाह द्वारा आठ सौ साल पहले अग्रिम में दे दी गई थी (यशायाह 7:14; 9:1-7)। मत्ती 1:21, 25 के अनुसार उसके नाम का चयन भी ईश्वरीय था। अध्याय 2 में उस ईश्वरीय रक्षा के जो बालक के रूप में उसे दी गई और उस अगुआई के लिए जो उसके गोद लेने वाले पिता को दी गई थी कई संकेत देता है। बालक यीशु के विरुद्ध हेरोदेस की नृशंस चाल आरम्भ होने पर ज योतिषियों को स्वप्न में (स्पष्टतया ईश्वरीय हस्तक्षेप से) उसके पास न जाने की चेतावनी दी गई, अन्यथा उन्हें नये राजा के ठिकाने बताने के लिए विवश किया जा सकता था (2:12)। यूसुफ को भी इसी प्रकार स्वप्न में स्वर्गदूत के द्वारा अपने परिवार को लेकर मिस्र चले जाने की चेतावनी मिली (2:13-15)। हेरोदेस की मृत्यु के बाद यीशु को फिर से स्वर्गदूत के द्वारा इस्राएल में लौट जाने को कहा गया, पर यहूदिया में नहीं जहां हेरोदेस का बेटा अरखिलाउस राज कर रहा था।

परमेश्वर का पुत्र हम सब की तरह यानी एक बालक के रूप में हमारे संसार में प्रवेश करते हुए, एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया। उस निराशाजनक स्थिति में भी उस पर निगरानी रखी गई और उसके पिता द्वारा तब तक उसकी देखभाल की गई जब तक उसके लिए संसार के पापों के लिए छुटकारे के रूप में अपना प्राण देने का समय नहीं आया-जो ऐसी बात थी कि उसे केवल परमेश्वर-मनुष्य यीशु ही कर सकता था।

मत्ती की आरम्भिक आयतें हमें इस्राएल के समृद्ध और स्पष्ट इतिहास में यीशु को इसके पूरा होने के रूप में दिखाने के लिए तेजी से एक सर्वेक्षण करवाती हैं।

सारांश

सुसमाचार के लेखक का उद्देश्य केवल इतिहास का सबक बताना नहीं था। वह हमें *हमारे* मसीहा, *हमारे* उद्धारकर्त्ता, *हमारी* देह में परमेश्वर के बारे में बताना चाहता था। यह वह संदेश नहीं है जिसे हम में से कोई नज़रअन्दाज़ कर सके, क्योंकि हम भी पापियों की उस लम्बी कतार में खड़े हैं। हम सभी को छुटकारे, क्षमा और उस पूर्णता की आवश्यकता है जो केवल यीशु दे सकता है।

सुसमाचार का मत्ती का वृत्तांत (और पूरा नया नियम) यीशु नाम के आदमी की एक सुन्दर कहानी से कहीं अधिक है। यह विश्वास करने और आज्ञा मानने और छुटकारा ढूंढ़ने की *बुलाहट* है। यह खुशखबरी है जिसे हम सब को सुनना आवश्यक है।

टिप्पणी

[1]थॉमस जी. लौंग, *मैथ्यू,* वेस्टमिंस्टर बाइबल कम्पेनियन (लूइस्विले: वेस्टमिंस्टर जॉन नौक्स प्रैस, 1997), 8.

मत्ती और लूका में जन्म की कहानी

हमारे पास यीशु के जन्म के नये नियम के केवल दो वृत्तांत हैं (मत्ती 1; 2; लूका 1; 2), इसलिए यह देखने के लिए कि वे एक जैसे और अलग-अलग कैसे लगते हैं, उनमें से दोनों को देखें।

यीशु के जन्म की कहानी बताते हुए मत्ती यूसुफ़ पर उसके साथ परमेश्वर के वार्तालापों पर और मरियम के गर्भवती होने के बारे में उसके विचारों पर अधिक ध्यान दिलाता है। लूका कहानी को मरियम के दृष्टिकोण से अलग बताता है: उसे स्वर्गदूत का दर्शन हुआ था न कि यूसुफ को, उसके लिए परमेश्वर की भूमिका की समझ और विश्वास से उसकी स्वीकृति और इलिशबा के पास उसका जाना, उसके लिए था।

मत्ती में नवजन्मे राजा को दण्डवत करने के लिए सबसे पहले आने वाले लोग ज्योतिषी (''पंडित या बुद्धिमान'') जिनके महंगे उपहारों से यह संकेत मिलता है कि वह धनवान लोग थे। परन्तु लूका में जन्म की घोषणा दीन चरवाहों के एक झुण्ड को दी जाती है।

जिस प्रकार मत्ती अब्राहम से उसकी परिवार रेखा लेते हुए यीशु की वंशावली के साथ आरम्भ करता है, लूका ने भी ऐसा ही किया है (लूका 3:23-38)। इसके मुकाबले लूका की वंशावली का आरम्भ यीशु से होकर पीढ़ियों तक पीछे चला जाता है। यह सूची अब्राहम पर रुकती नहीं है। बल्कि यह यीशु की परिवार रेखा पीछे आदम की ओर और परमेश्वर पर चली जाती है। इस वंशावली का उद्देश्य यीशु की पहचान सम्पूर्ण मनुष्यजाति के साथ कराना प्रतीत होता है न कि केवल इस्राएल के साथ, क्योंकि विश्वव्यापी उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु की भूमिका लूका के मुख्य विषयों में से एक है। दोनों वंशावलियां एक जैसी नहीं हैं, उन पीढ़ियों में भी नहीं जिनमें उनमें मेल खाता है। इसमें से कोई बात यह संकेत नहीं देती कि दोनों विवरणों में से कोई गलत है। बल्कि यही संकेत देती है कि प्रत्येक लेखक ने जो कुछ हुआ उसके अलग अलग पहलुओं पर ज़ोर देना चुना।

मत्ती के विवरण से लूका के विवरण को दो अतिरिक्त विशेषताएं अलग करती हैं: लूका यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म को लिखने वाला और यीशु के बचपन की घटना का वर्णन करने वाला जिसमें यीशु बारह साल की उम्र में मन्दिर में गया था, सुसमाचार का एकमात्र विवरण है (लूका 2:41-52)।

पवित्र शास्त्र का ''पूरा होना''

जब हम पवित्र शास्त्र की किसी बात को ''पूरा'' होने की बात पढ़ते हैं तो आमतौर पर हमें उस भविष्यवाणी का विचार आता है जो ''सच होती'' है यानी कोई ऐसी बात जो बिल्कुल वैसे ही होती है, जैसे उसके लिए कहा गया था कि होगा, जैसे मसीहा के जन्म के स्थान के सम्बन्ध में मीका 5:2 की भविष्यवाणी (मत्ती 2:3-6)। परन्तु पवित्र शास्त्र के ''पूरा'' होने की अवधारणा आम तौर पर उससे जटिल होती है।

''पूरा होने'' का अर्थ याद रखने का एक आसान ढंग पवित्र शास्त्र के अपेक्षित अर्थ ''पूरा भरना'' सोचना है। उदाहरण के लिए मत्ती ने लिखा कि मरियम से यीशु के जन्म से यशायाह 7:14 ''पूरा हुआ'' उसके कहने का अर्थ था कि राजा अहाज़ को चिह्न के रूप में यशायाह द्वारा की गई जन्म की भविष्यवाणी उसका केवल एक भाग था जो परमेश्वर के मन में था। वास्तविक कहानी ''मरियम'' नाम की कुंवारी से अन्त: यीशु का जन्म है।

कई बार पुराने नियम का वचन जो ''पूरा'' हो गया है; लगता नहीं है कि नये नियम के लेखक ने उसे अन्तिम अर्थ दिया है। इसका एक उदाहरण मत्ती 2:13-15 है, जो यूसुफ़ के

हेरोदेस को नव जन्मे राजा की हत्या करने से रोकने के लिए मिस्र में जाने की बात बताता है। बाद में परिवार फलस्तीन में वापस आ गया। मत्ती ने लिखा, होशे 11:1 से ली गई है। मूल संदर्भ में यह निर्गमन अर्थात मिस्र की दासता से परमेश्वर के अपने लोगों को निकालने की बात कर रही थी। परन्तु जहां तक मत्ती की बात थी यह घटना परमेश्वर के उसके महान पुत्र, यीशु को मिस्र से बुलाने की परछाई है।

नये नियम में इन ''पूरा होने'' को देखते हुए हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुआ लेखक हमें यह समझने में सहायता कर रहा था कि परमेश्वर का वचन बहुआयामी है और यीशु क्या है और उसे क्या किया इसे दिखाने के कई ढंग इस्तेमाल करता है।